

Aksharabrahma Virat SvarupaM

——
अक्षरब्रह्मस्य विराट्स्वरुपम्

——
Document Information



Text title : AksharabrahmasvarUpa from Maheshvaratantra

File name : akSharabrahmasvarUpamAheshvaratantra.itx

Category : misc

Location : doc_z_misc_general

Transliterated by : Yogesh K Sharma yosharma at gmail.com

Proofread by : Yogesh K Sharma yosharma at gmail.com

Translated by : Sudhakar Malaviya

Description/comments : Maheshwara Tantra Jnanakhanda prathama paTalaM Verses 48-67

Latest update : May 27, 2019

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 16, 2023

sanskritdocuments.org



Aksharabrahma Virat SvarupaM

अक्षरब्रह्मस्य विराट्स्वरूपम्



माडेश्वरतन्त्रे ज्ञान भाडे अक्षरब्रह्मस्य विराट्स्वरूपं
अक्षरब्रह्म का विराट् स्वरूप

विराट तस्य वपुः स्थूलं पञ्चधा तु समुद्भवम् ।
पातालं पादमूलेऽस्य पाष्णिदेशे रसातलम् ॥ १ ॥

उसका शरीर विराट् और स्थूल है जो पाँच गुना करके समुद्भूत है ।
उस विराट् पुरुषके पैरके तलवेमें पाताल है, अेऽःियाँ और (पंजे)
रसातल है ॥ १ ॥

गुल्फे मडातलं तस्य जङ्घयोश्च तलातलम् ।
जङ्घयोपरि सुतलं वितलं कट्युत्तरं प्रिये ॥ २ ॥

कटिमध्येऽतलमस्ति मर्त्यलोकोदरे तथा ।
पाश्र्वदेशेऽभुवर्लोकस्तदूर्ध्वं च स्वराद्यः ॥ ३ ॥

गुल्फ (अेऽःीकी ऒपरकी गाँठों में) मडातल उसकी जाँठों (पिडली)
में तलातल है । जङ्घाओंके ऒपर सुतल और डे प्रिये ! कटिके उत्तरमें
वितल है । कटिके मध्यमें अतल और उदरमें मर्त्यलोक है । पीठमें
भुवर्लोक है और उसके ऒपर 'स्वः' आदि लोक हैं ॥ २-३ ॥

ज्योर्तीष्यस्योरःस्थले च ग्रीवायां च मडस्तथा ॥ ४ ॥

इसके वक्षस्थलमें स्वर्गलोक अेवं ग्रीवामें मडलोक हैं ॥ ४ ॥

वदने जनलोकोऽस्य तपोलोको ललाटके ।
सत्यलोको ब्रह्मरन्ध्रे बाह्वोरिन्द्राद्यः सुराः ॥ ५ ॥

मुभमें जन लोक है और इनके ललाटमें तपोलोक है । इन विराट् पुरुषके
ब्रह्मरन्ध्रमें (शिरमें शिभाके पास जो 'ब्रह्मरन्ध्र' नामक मडीन
सा छिन्ना होता है उसमें) सत्यलोक है । इन्द्र आदि देवता इनकी भुजाओं

हैं ॥ ५ ॥

दिशः कर्णप्रदेशस्य शब्दस्तच्छ्रोत्रमध्यगः ।

नासयोरस्य नासत्यौ मुष्णे वह्निः समाश्रितः ॥ ६ ॥

दिशाथैं कान हैं । शब्द श्रोत्रेन्द्रिय है । इनकी दोनों नासाओंमें

नासत्या-द्रय हैं और इनका मुष्ण अग्नि है ॥ ६ ॥

सूर्योऽस्य यक्षुषि गतः पक्ष्मणि ङ्यङनीशितुः ।

दंष्ट्रायां यमस्तस्य ङास्ये माया मलेश्चरि ॥ ७ ॥

इनकी आपमें सूर्य हैं । रात और दिन इन प्रभुकी दोनों पलकें हैं ।

दंष्ट्रा (दाँतों) में यमराज हैं । हे मलेश्चरि ! इनकी मधुर मुस्कान

ही माया है ॥ ७ ॥

उत्तरोष्ठे स्थिता लज्जा लोभः स्यादधरोष्ठके ।

स्तनयोरस्य वै धर्मः पृष्ठेऽधर्मः समाश्रितः ॥ ८ ॥

लज्जा ऊपरके ओष्ठ और नीचेके ओष्ठ लोभ हैं । इनके दोनों स्तनोंमें

धर्म और पृष्ठ भागमें अधर्म आश्रय करके रहता है ॥ ८ ॥

कुक्षिष्वस्य समुद्रा वै पर्वता ङ्यस्थिसन्धिषु ॥

आपगा नाडिदेशस्था वृक्षा रोमपथि स्थिताः ॥ ९ ॥

इनकी कुक्षि समुद्र है इनके अस्थिकी सन्धियाँ अर्थात् जोडः पर्वत हैं ।

नाडःी प्रदेश नदियाँ हैं । रोमोंके पथ वृक्ष हैं ॥ ९ ॥

मेघाः केशेषु लृट्ये यन्द्रमाः परिकीर्तितः ।

एदं स्थूलशरीरं तु ब्रह्मणः परमात्मनः ॥ १० ॥

केशोंमें मेघ हैं और लृट्यमें यन्द्रमा कहे गये हैं । इस प्रकार

विराट् पुरुष परब्रह्म परमात्मा का यह विशालकाय शरीर है ॥ १० ॥

थयत्तयाऽपरिच्छेद्यमन्तपारविवर्जितम् ।

लिङ्गं नारायणस्तस्य ङ्यक्षरस्य चिदात्मनः ॥ ११ ॥

उस चिदात्मा अक्षररूप ब्रह्म का यह शरीर आदि और अन्त से रहित है

अवे वही लिङ्ग है और वही नारायण है ॥ ११ ॥

डिरण्यगर्भं जगदीशितारं नारायणं यं प्रवदन्ति सन्तः ।

सर्वस्य धातारमन्तमाद्यं प्रधानपुंसोरपि छेत्तुमीशम् ॥ १२ ॥

उसी विराट् पुरुष को सन्त लोग छिरायगर्भ, जगत्ते एश और नारायणके
रूपमें कडा करते हैं । वड सभिकी सृष्टि करने वाले हैं, वड अनन्त
हैं, प्रधान पुरुष से भी आद्य हैं । वड एशके भी कारण हैं ॥ १२ ॥

तं सर्वकालावयवं पुराणं परात्परं योगिभिरीड्यपादम् ।
ब्रह्मेशविष्णुप्रमुषैकछेतुं यतः प्रवृत्तो निगमस्य पन्थाः ॥ १३ ॥

उन सभी कालोंके अवयव, पुराण पुरुष अवं परात्पर ब्रह्मके पैर
योगियों द्वारा स्तुत हैं । वडी विराट् पुरुष ब्रह्मा, विष्णु अवं मडेश आदि
प्रमुष देवोंके भी कारण हैं तथा एन्डीसे वेद भी निकले हैं ॥ १३ ॥

तं देवदेवं जगतां शरण्यं नारायणं यस्य वदन्ति लिङ्गम् ।
यावन्न लिङ्गं प्रलयं प्रयाति स्थूलं वपुश्चापि न शान्तिमेति ॥ १४ ॥

उन देवोंके भी देव, जगत् को शरण प्रदान करने वाले, नारायण रूप
जिस लिङ्ग (शरीर) की विद्भजन स्तुति किया करते हैं । जब तक उस
विराट् पुरुष का लिङ्ग शरीर प्रलय को प्राप्त नहीं होता तब तक
उनका स्थूल शरीर भी शान्ति को नहीं प्राप्त करता है ॥ १४ ॥

ततः परं कारणमेव तस्य वपुः परस्यात्मन अवे मोडः ।
यावद्विमोडः प्रशमं न याति न लिङ्गमुत्सीदति कार्यबद्धम् ॥ १५ ॥

जब तक उसका कारण रूप शरीर विद्यमान होता है तब तक मोड रहता
है । और जब तक मोड का नाश नहीं होता तब तक कार्य से आबद्ध
लिङ्ग शरीर का मोक्ष भी नहीं होता है ॥ १५ ॥

न कारणं तावदुपैति शान्तिं यरायरस्यापि य बीजभूतम् ।
यावन्मडाकारणमम्बिके तत् न शान्तिमायाति य बीजबीजम् ॥ १६ ॥

यरायर जगत् का बीजभूत (विराट्पुरुषरूप) कारण भी तब तक
शान्ति को नहीं प्राप्त करता है, डे अम्बिके ! जब तक बीज का भी बीजभूत
मडाकारण शान्ति को नहीं प्राप्त करता है ॥ १६ ॥

गुड्याद् गुडयतरं शास्त्रमिदमुक्तं तवानघे ।

न कस्याप्यग्रतो वाच्यं सत्यं सत्यं प्रियंवदे ॥ १७ ॥

डे अनघे (निष्पाप) ! एस प्रकार गुडय से भी गुडयतर एस रहस्य युक्त

शास्त्रं को मैनं तुमसे कडा । ले प्रियवादिनि ! एसे सय सय (यथावत्)
किंसीके समक्ष नडीं कडना याछिअे ॥ १७ ॥

न पद्मायै हरिः प्राड प्रार्थितोऽपि पुनः पुनः ।
तन्मयात्र तव स्नेहात्प्रकटीकृतमुख्यैः ॥ १८ ॥

बासम्भार प्रार्थना करने पर भी भगवान विष्णु ने इस रहस्य को लक्ष्मी
से नहीं कडा । उस रहस्य को मैंने तुम्हें स्नेह से प्रकट कर दिया ॥ १८ ॥

न गुडयायापि पुत्राय गणाराजाय नन्दिने ।
सुगोपितमिदं भद्रे तव स्नेहाद्गुहीरितम् ॥ १९ ॥

गणाराज, रहस्य का गोपन करने वाले, पुत्र नन्दी से भी एसे मैंने छिपा
रभा था जिसे, हे भद्रे ! तुम्हारे स्नेहके कारण, मैंने तुमसे कडा है ॥ १९ ॥


तस्माद्गोप्यतरं भद्रे वराङ्गमिव सर्वतः ।
एतीदं ते समाख्यातं किमन्यत्प्रष्टुमिच्छसि ॥ २० ॥

एसविअे यड उसी तरह यारों ओर से गोपनीय है जैसे वराङ्गों (गोपनीय
अंगों) का यारों ओर से गोपन किया जाता है । एस प्रकार तुमसे यड सभ
विषय अखे प्रकार से मैंने कड दिया है । अब और तुम क्या पूछना
याडती हो ? ॥ २० ॥


एति श्रीनारदपञ्चरात्रे माडेश्वरतन्त्रे ज्ञानपाडे
अक्षरब्रह्मस्य विराट्स्वरूपवर्णनं सम्पूर्णम् ।

Verses 48-67 from Maheshvaratantra Jnanakhanda prathama paTalaM

Encoded and proofread by Yogesh K Sharma yosharma at gmail.com

——
Aksharabrahma Virat SvarupaM

pdf was typeset on September 16, 2023

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

